20-09-2020

संस्कृतसामान्यम् । उपशास्त्री II

अनिवार्यपत्रम् ।

शब्दरूपाणि ।

धनुष्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	धनुः	धनुषी	धनूंषि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
चतुर्थी	धनुषे	,,	धनुर्भ्यः
पञ्चमी	धनुषः	,,	,,
षष्ठी	,,	धनुषोः	धनुषाम्
सप्तमी	धनुषि	,,	धनुःषु
सम्बो०	हे धनु !	हे धनुषी !	हे धनूंषि !

इसी प्रकार वपुष्, चक्षुष्, यजुष् आदि शब्दों के रूप बनेंगे ।

डॉ० निर्मल कुमार झा (स० प्राचार्य)
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ ।

20-09-2020

साहित्यम् । शास्त्री

छन्दविचारः ।

अतिजगती → इस छन्द के प्रत्येक पाद या चरण में 13 (तेरह) अक्षर होते हैं। अंतिम (पादान्त) अक्षर गुरु होता है।

इसी छन्द के अन्य भेदों में क्षमा, प्रहर्षिणी, मत्तमयूरम, अतिरुचिरा, मञ्जुभाषिणी तथा चन्द्रिका छन्द आते हैं।

"प्रहर्षिणी छन्दलक्षणम्" →

"म्नौ ज्रौ गस्त्रिदशयतिः प्रहर्षिणीयम्।"

तीन तथा दस अक्षर पर यति

इस अतिजगती छन्द के भेद प्रहर्षिणी छन्द के प्रत्येक पाद में अक्षरों के क्रम मगण, नगण, जगण, रगण तथा अंत में एक गुरु अक्षर के अनुसार होता है।

यथा →	मगण	नगण	जगण	रगण	गुरु
	S S S, (यति)	। । ।	। S ।	S, (यति) । S	S

वि	द्वांसो,	य	दि	म	म	दो	ष	मु,	द्गि	रे	यु:	
चे	द्वा	ते,	गु	ण	ग	ण	मे	व	कीं,	र्त	ये	यु:।
त	त्तु	ल्यं,	ब	त	म	नु	ते	म	नो,	म	दी	यं
उ	त्कृ	ष्टं,	य	दि	पु	न	रे	व	मा,	ह	म	न्दः।

विद्वांसो, यदि मम दोषमुद्गिरेयु चेद्वा ते, गुणगणमेव कीर्तयेयुः
तत्तुल्यं, बत मनुते मनो, मदीयं, उत्कृष्टं, यदि पुनरेवमाह मन्दः

(हस्ताक्षर)

डॉ॰ निर्मल कुमार झा, (स॰ प्राचार्य)
रा॰ उ॰ सं॰ महावि॰ सुखसेना, पूर्णियाँ।

20-09-2020

उपशास्त्री I

संस्कृतसामान्यम् ।

अनिवार्यपत्रम् ।

सखि (इकारान्त, पुल्लिङ्ग)

विभक्तिः -	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	,,	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	,,	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	,,	,,
षष्ठी	,,	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	,,	सखिषु
सम्बोधन -	हे सखे !	हे सखायौ !	हे सखायः !

डॉ० निर्मल कुमार झा, (स० प्राचार्य)
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ